Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 2, Issue 9, pp 29-34, September 2025

प्राचीन भारत की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

डॉ. देश दीपक वर्मा

सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, शक्ति स्मारक संस्थान दुल्हिनपुर, बलरामपुर (उत्तर प्रदेश)

Email - *vermadeshsss@gmail.com*

सारांश

गुरुकुल शिक्षा भारत की एक प्राचीन, समग्र शैक्षिक प्रणाली थी, जहाँ छात्र एकांत वनों में गुरु के साथ रहकर शिक्षा और जीवन के अनुभवों के माध्यम से समग्र ज्ञान प्राप्त करते थे. इसमें सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि नैतिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक शिक्षा भी शामिल थी. छात्र गुरु की देखरेख में रहते, उनके कार्यों में हाथ बँटाते और अनुशासन, विनम्रता व सेवा जैसे मूल्यों को सीखते थे. गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्राचीन भारत में प्रचलित पारंपरिक भारतीय स्कूली शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। यह एक अद्वितीय शैक्षिक मॉडल था जो समग्र शिक्षा और चरित्र निर्माण पर ज़ोर देता था। गुरुकुल प्रणाली भारतीय उपमहाद्वीप की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली है। यह पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में डे-बोर्डिंग प्रणाली के आगमन तक प्रचलित थी जिसे अंग्रेजों ने भारतीय उच्च वर्गों को अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने के लिए शुरू किया था। इसका उपयोग भारत में धार्मिक और साथ ही धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जाता था। गुरुकुल ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। गुरुकुल प्रणाली ने अपनी सर्वांगीण शिक्षा और व्यक्तिगत मार्गदर्शन के माध्यम से, छात्रों और उनके शिक्षकों के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित करके और समग्र विकास पर बल देकर प्राचीन शिक्षा को आकार दिया है। आधुनिक शिक्षा में, यह अधिक वैयक्तिकरण और छात्र प्रेरणा का एक संभावित स्रोत है।

संकेत शब्द-- गुरुकुल, संस्कृति, प्राचीन काल, वैदिक शिक्षा प्रणाली, अनुभवात्मक शिक्षा, नैतिक आधार

प्रस्तावना

गुरुकुल प्रणाली को ऐतिहासिक रूप से एक संगठित तरीके से शिक्षा प्रदान करने के प्रारंभिक रूप के रूप में दर्ज किया गया है, वह भी बड़े पैमाने पर। लगभग 1200 के दशक तक अधिकांश राजवंशों के अधीन गुरुकुलों को हमेशा राज्य संरक्षण प्राप्त था। भारत में मुस्लिम शासन के आगमन के साथ, प्रणाली को बहुत अधिक प्रणालीगत विनाश का सामना करना पड़ा यानी गुरुकुलों का समर्थन करने वाली प्रणाली को बड़ी क्षति हुई। लेकिन जब तक अंग्रेजों ने भारत पर अधिकार नहीं कर लिया, तब तक यह व्यवस्थित विनाश अभियानों का सामना करते हुए बहुत ही विकृत प्रारूप में काम करता रहा।

गुरुकुलों का इतिहास भारत की शिक्षा प्रणाली का इतिहास है और इसने खगोल विज्ञान, गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास आदि जैसे विषयों को कैसे जन्म दिया गुरुकुल की शुरुआत वैदिक युग में हुई थी जब मौखिक परंपराओं के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी और गुरु-शिष्य परंपरा की मदद से इस प्रणाली को जीवित रखा गया था। धीरे-धीरे इन गुरुकुलों ने संस्थागत रूप ले लिया और हर तरह का ज्ञान प्रदान करने के लिए इस प्रणाली ने काम करना शुरू कर दिया। भारत में शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली वैदिक काल में फली-फूली। प्राचीन काल में गुरुकुल शिक्षा के मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करते थे। गुरुकुलों में, ब्रह्मचारी (छात्र), या सत्यनवेशी परिव्राजकास दूर-दूर से अपनी शिक्षा पूरी करने आते थे।

संबंधित साहित्य की समीक्षा–

अभिलाषा सिंह और प्रो. रश्मि सोनी (2019) का अध्ययन दिखाता है कि गुरुकुल प्रणाली को ई-लर्निंग, वर्चुअल क्लास, और एआई के माध्यम से आधुनिक ढांचे में जोड़ा जा सकता है–जो समावेशी, लचीले और मूल्य-आधारित शैक्षिक अनुभव प्रदान करता है

प्रोफेसर अवस्थी और भटनागर का अध्ययन (2024) शीर्षक "गुरुकुलम् रिवाइवल" में यह दर्शाया गया है कि शिक्षा में ज्ञान, अनुशासन और चरित्र निर्माण पर पुनः बल दिया जा रहा है जो आधुनिक शिक्षा की मात्र व्यावसायिकता को संतुलित करता है

प्रोफेसर अवस्थी और भटनागर का अध्ययन (2024) द्वारा छत्तीसगढ़ के दूरदराज क्षेत्रों में "गुरुकुल" खोलना यह दिखाता है कि शिक्षा समाजान्तर्गत विकास और जीवन कौशल के माध्यम से कैसे बदलाव ला सकता है

प्रोफेसर नाग शंकर हरि हृदय गोपालन का अध्ययन (2021) नागपुर में स्थापित एक गुरुकुल (श्री वेदविद्यावर्धिनी) ने वेद, संस्कृति, योग, और नैतिक शिक्षा को पर्यावरणीय और गैर-व्यवसायिक रूप में पुनर्जीवित किया–जहां विद्यार्थी आध्यात्मिक अनुशासन और जीवन मूल्यों का गहन अनुभव प्राप्त कर रहे हैं

एक शोध पत्र में गुरुकुल प्रणाली की तुलना आधुनिक स्कूलिंग से करते हुए यह स्पष्ट किया गया कि इसमें चरित्र निर्माण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (emotional intelligence), और संतुलित जीवन पाठ शामिल हैं–हालांकि इन्हें डिजिटल, तेज़-तर्रार दुनिया में संतुलित ढंग से जोड़ पाने की चुनौतियाँ हैं |

अध्ययन का औचित्य

गुरुकुल, पारंपरिक भारतीय शिक्षा केंद्र, आधुनिक आडंबर और प्राचीन ज्ञान के समकालीन शिक्षा के साथ सम्मिश्रण के कारण ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, आधुनिक गुरुकुल, जैसे कि समग्र शिक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने वाले, शास्त्रीय शिक्षाओं और वर्तमान शिक्षण विधियों के संयोजन से प्रेरित हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मार्गदर्शन और सामुदायिक कार्य संबंधी गुरुकुल सिद्धांतों को शामिल करने से वर्तमान शिक्षा प्रणाली का पूरक बन सकता है और बौद्धिक एवं नैतिक विकास की दिशा में अधिक संतुलन लाया जा सकता है।

गुरु-शिष्य का रिश्ता आपसी सम्मान और समर्पण पर आधारित होता है। गुरु ज्ञान प्रदान करते हैं और छात्रों को शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत विकास के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। गुरुकुल की दिनचर्या में सुबह जल्दी उठना, ध्यान, कठोर अध्ययन और सामुदायिक जीवन शामिल है। इसमें वेद, शास्त्र, दर्शन, कला और विज्ञान जैसे विविध विषयों का समावेश होता है।

छात्र मौखिक संप्रेषण और व्यावहारिक अनुप्रयोग की रटंत विधियों के माध्यम से सीखते हैं। समग्र शिक्षा इस प्रणाली की कुंजी है। अनुशासन और नैतिक मूल्यों को शिक्षक-शिष्य के बीच एक मज़बूत संबंध स्थापित करके आत्मसात किया जाता है, जिससे व्यापक शिक्षण अनुभव सुनिश्चित होता है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एक प्राचीन भारतीय परंपरा थी जिसमें छात्र एकांत वनों में गुरु या शिक्षक के मार्गदर्शन में रहते और शिक्षा ग्रहण करते थे। लगभग 1500 ईसा पूर्व से शुरू हुई यह प्रणाली समग्र विकास के लिए शैक्षणिक शिक्षा को नैतिक और आध्यात्मिक विकास के साथ जोड़ती है।

गुरुकुल प्रणाली भारत में अपनाई जाने वाली प्राचीन शिक्षा प्रणालियों में से एक है। इस प्रणाली में वन आश्रमों में ऋषियों या शिक्षकों द्वारा संचालित आवासीय विद्यालय शामिल हैं। छात्र, जिन्हें "शिष्य" कहा जाता है, गुरु के साथ रहते हैं और मौखिक शिक्षा, व्यावहारिक अनुभव और नैतिक शिक्षा के माध्यम से सीखते हैं।

वैदिक काल---

वह समय है जब वैदिक गुरुकुल प्रणाली विकसित हुई थी, और इसकी संरचना और सिद्धांतों को परिष्कृत किया गया था। ऋषियों द्वारा जिन मूल सिद्धांतों की परिकल्पना की गई थी, वे आज भी इस आधुनिक युग में भी बहुत सार हैं। वेदों को सीखने के लिए स्थापित की गई शिक्षण प्रणाली धीरे-धीरे व्यावसायिक और वैज्ञानिक प्रणालियों को सीखने के अनुप्रयोग में विकसित हुई।प्राचीन काल से ही पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली ने दो प्रकार के ज्ञान प्रदान करने पर जोर दिया है - पहला भौतिक ज्ञान जो वास्तविक जीवन की समस्या-समाधान कौशल विकसित करता है और दूसरा आध्यात्मिक ज्ञान जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में मदद करता है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली लेखन कला की सहायता के बिना भी अपनी संस्कृति और साहित्य के संरक्षण और प्रसार में सफल रही। केवल आक्रमणकारियों द्वारा मंदिरों और मठों के विनाश के कारण ही साहित्य लुप्त हो गया। इस विशाल उपमहाद्वीप में आज भी जो सांस्कृतिक एकता विद्यमान है, उसका श्रेय संस्कृति के सफल संरक्षण और प्रसार को जाता है।

प्राचीन भारत में सर्वप्रथम जिस शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ, उसे वैदिक शिक्षा प्रणाली के नाम से जाना जाता है। दूसरे शब्दों में, प्राचीन शिक्षा प्रणाली वेदों पर आधारित थी, इसलिए इसे वैदिक शिक्षा प्रणाली का नाम दिया गया। कुछ विद्वानों ने वैदिक शिक्षा काल को ऋग्वेद काल, ब्राह्मण काल, उपनिषद काल, सूत्र काल, स्मृति काल आदि में विभाजित किया है, लेकिन इन सभी कालखंडों में वेदों की प्रधानता के कारण शिक्षा के उद्देश्यों और आदर्शों में कोई परिवर्तन नहीं आया। इसीलिए इन कालखंडों की शिक्षा का अध्ययन वैदिक काल के अंतर्गत किया जाता है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली-- प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली ने ज्ञान, नैतिकता और कौशल का एक अनूठा संगम प्रस्तुत किया. यह प्रणाली न केवल बौद्धिक विकास पर केंद्रित थी, बल्कि जीवन के सभी पहलुओं को विकसित करके एक पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करती थी. आज भी, प्राचीन शिक्षा के सिद्धांत आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिक हैं, खासकर समग्र विकास और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के संबंध में | प्राचीन भारत में शिक्षा का महत्व सांस्कृतिक और सामाजिक स्थिरता, सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास, तथा ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में था. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य जीवन के सभी पहलुओं - बौद्धिक, शारीरिक और आध्यात्मिक - का विकास करना था. कला शिक्षा ने जीवन कौशल और रचनात्मकता को बढ़ावा दिया. शिक्षा प्रणालियाँ जैसे गुरुकुल, मठ, और पाठशालाएँ छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान, नैतिक

मूल्यों और समाज के प्रति जिम्मेदारी सिखाने में सहायक थीं, जिससे एक स्थिर और समृद्ध समाज का निर्माण होता था.

आध्यात्मिक जागृति मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य को जानने में सहायक है। वे प्रत्येक व्यक्ति की अंतर्निहित दिव्यता में विश्वास करते थे और ध्यान, निस्वार्थ सेवा और भक्ति जैसी आध्यात्मिक प्रथाओं के माध्यम से अपने वास्तविक स्वरूप की प्राप्ति की वकालत करते थे।

गुरुकुल प्रणाली-- गुरुकुल प्रणाली एक आवासीय विद्यालय प्रणाली थी जिसका इतिहास लगभग 5000 ईसा पूर्व, विशेष रूप से वैदिक काल से जुड़ा है। यदि हम इसकी तुलना भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली से करें तो यह एक बिल्कुल अलग विद्यालय प्रणाली थी। इस शिक्षा प्रणाली में छात्र (शिष्य/शिष्य) शिक्षक (गुरु) के यहाँ जाते थे और अपनी बुनियादी शिक्षा पूरी होने तक वहीं रहते थे। छात्रों को मूलतः तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता था: 'वसु' (वे जो 24 वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करते हैं), 'रुद्र' वे जो 36 वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करते हैं), और 'आदित्य' (वे जो 48 वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करते हैं |

समकालीन शिक्षा प्रणाली-- समकालीन शिक्षा पद्धतियों के विस्तार को बढ़ावा देने में गुरुकुल प्रणाली के कुछ तत्वों को शामिल किया जाना चाहिए ताकि इसमें शैक्षणिक उत्कृष्टता और नैतिक विकास के साथ-साथ व्यक्तिगत विकास भी शामिल हो। अनुसंधान को बढ़ावा देना और शिक्षा के विभिन्न तरीकों को समर्थन देना, सीखने के अनुभव को समग्रता से समृद्ध बनाता है और शिक्षण के अधिक नवीन एवं कुशल तरीकों के लिए रास्ते खोलता है।

भारत में गुरुकुल प्रणाली मार्गदर्शन, नैतिकता और सामुदायिक जीवन पर आधारित एक शाश्वत आदर्श है। जब इसे आधुनिक शिक्षण नवाचारों और समग्र शिक्षा के साथ पुनर्जीवित किया जाता है , तो यह परिवर्तनकारी शिक्षा का निर्माण करती है। यह मॉडल न केवल शैक्षणिक सफलता सुनिश्चित करता है, बल्कि आध्यात्मिक और भावनात्मक विकास भी सुनिश्चित करता है।

व्यक्तिवादी, सर्वांगीण शिक्षा-- व्यक्तिवादी, सर्वांगीण शिक्षा पर ज़ोर देते हुए, गुरुकुल प्रणाली उभरते शिक्षण मॉडलों को प्रभावित करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सरकारी और निजी पहल गुरुकुलों को पुनर्जीवित और प्रोत्साहित करने के तरीकों पर विचार कर रही हैं, जिनमें सांस्कृतिक आयाम तो बरकरार रहेगा ही, साथ ही समकालीन आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा जाएगा। यह एक प्रकार का मिश्रित शिक्षा मॉडल हो सकता है जिसमें गुरुकुल की गहनता और व्यक्तिगत मार्गदर्शन को आधुनिक तकनीकी उपकरणों और बदलते पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा जाएगा। इस प्रकार, यह सम्मिश्रण शिक्षा के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करेगा, पारंपरिक शिक्षा की समृद्धि को बनाए रखते हुए छात्रों को महत्वपूर्ण, प्रासंगिक कौशल से सुसज्जित करेगा।

व्यावहारिक गुरुकुलरू शिष्यों को एकजुट करना -- शिष्यों के मूल्यांकन के लिए किसी सैद्धांतिक परीक्षा की बजाय, विभिन्न कार्यों के माध्यम से ज्ञान की व्यावहारिक परीक्षाएँ अधिक होती थीं। गुरु अपने शिष्यों से कोई शुल्क लेने के बजाय, उन्हें पास के गाँव में जाकर भिक्षा माँगने के लिए कहते थे। भिक्षा में जो भी मिलता था, वे सभी उसे पकाकर खुशी-खुशी ग्रहण करते थे। गुरु की दृष्टि में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में कोई भेदभाव नहीं था। सभी एक साथ शिक्षा प्राप्त करते थे और गुरु के आश्रम में एक साथ रहते थे। इस प्रकार, शिष्यों के बीच एक गहरा भावनात्मक लगाव पैदा होता था।

वर्तमान परिदृश्य की बात करें तो कई लोग गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को एक विचित्र और अजीब अवधारणा मानते हैं। बिना किसी व्यवस्थित पाठ्यक्रम के गुरुओं के पास रहने का विचार आधुनिक शिक्षित माता-पिता के मन में एक बड़ा

प्रश्नचिह्न खड़ा कर सकता है। हालाँकि कुछ शिक्षाविदों को समाज के समग्र विकास के लिए वर्तमान शिक्षण पद्धति में गुरुकुल प्रणाली के कुछ दृष्टिकोणों को शामिल करने की प्रबल भावना है। जैसा कि हम जानते हैं कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली व्यावहारिक और व्यावहारिक ज्ञान पर अधिक केंद्रित थी, जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक हिस्सा हो सकती है क्योंकि हमें 21वीं सदी में अधिक कौशल-आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। जैसा कि हम जानते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कई खामियाँ हैं, लेकिन फिर भी, यह वर्तमान युग के लिए काफी प्रासंगिक है।

भविष्य की शिक्षा प्रणाली के लिए सुझाव :

हमारी स्कूली शिक्षा प्रणाली को धार्मिक ग्रंथों की तुलना में अधिक वैज्ञानिक शोध सामग्री की आवश्यकता है। हम सभी को अपने छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित करने की आवश्यकता है। लेकिन यह सब समग्र रूप से होना चाहिए। हमें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने की आवश्यकता है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली की तरह, छात्रों को अपनी मुख्य पाठ्यक्रम सामग्री के अलावा पाठ्येतर गतिविधियों पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्हें चरित्र और नैतिक विकास के मूल्य सिखाए जाने चाहिए। छात्रों के बीच संबंध अधिक पवित्र होने चाहिए। शिक्षक और छात्रों के बीच हमेशा सम्मानजनक तरीके से मैत्रीपूर्ण भावना होनी चाहिए। आधुनिक शिक्षा प्रणाली का आदर्श वाक्य छात्रों को संतुलित जीवन जीने की शिक्षा देना चाहिए, जो गुरुकुल प्रणाली के दौरान छात्रों को सिखाया गया था ताकि वे अपने करियर और जीवन को स्वतंत्र रूप से चुन सकें।

निष्कर्ष:

गुरुकुल प्रणाली, प्राचीन होने के बावजूद, आधुनिक शिक्षा के लिए बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। हालाँकि हम आधुनिक संस्थानों को गुरुकुलों से पूरी तरह प्रतिस्थापित नहीं कर सकते, लेकिन एक मिश्रित मॉडल — अनुभवात्मक शिक्षा, नैतिक आधार और डिजिटल प्रगति का संयोजन —एक सर्वांगीण शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकता है।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, शिक्षा को छात्रों को सिर्फ नौकरियों के लिए ही तैयार नहीं करना चाहिए, बल्कि जीवन, मूल्यों और ज्ञान के लिए भी तैयार करना चाहिए - एक ऐसा सिद्धांत जिस पर गुरुकुल प्रणाली ने सदियों पहले ही महारत हासिल कर ली थी।

उपसंहार-

शिक्षा हमेशा से मानव सभ्यता की आधारशिला रही है। गुरुकुल प्रणाली , एक प्राचीन भारतीय शिक्षा मॉडल, समग्र शिक्षा की एक समय-परीक्षित पद्धति थी जो औपनिवेशिक सुधारों द्वारा आधुनिक शिक्षा प्रणाली के आगमन से पहले सदियों तक फलती-फूलती रही। जहाँ आज के स्कूल और विश्वविद्यालय संरचित पाठ्यक्रम, मानकीकृत परीक्षाओं और डिजिटल शिक्षा पर ज़ोर देते हैं, वहीं गुरुकुल प्रणाली अनुभवजन्य ज्ञान, नैतिक मूल्यों और शिक्षक-छात्र संबंध पर केंद्रित थी । क्या यह प्राचीन प्रणाली आज भी आधुनिक शिक्षा के लिए प्रेरणास्रोत बन सकती है ?

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. अल्तेकर, ए. एस, (2021) एजुकेशन इन एन्सिएन्ट इण्डिया।
1. आचार्य, लक्ष्मीचन्द, (2019) भारतवर्ष की वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति, संजय प्रकाशन, दिल्ली।
2. डा. बी. बी. अग्रवाल, (2017) आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्यायें, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

3. डा. एल.बी. बाजपेयी, (2018) भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक प्रवृत्तियॉ, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
4. डा. सीताराम जायसवाल, (2022) भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ।
5. डा. सुरेन्द्र झा, (2025) प्राचीन शिक्षा पद्धति, आशुतोष प्रकाशन, लखनऊ।
6. लाल , रमन बिहारी (2024) शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग , आर लाल बुक डिपो|
7. डॉ० सत्यपाल रूहेला (2021) भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी|
8. डॉ० एम रामा सुन्दर राव (2000) शरीर क्रिया विज्ञान चतुर्थ संस्कण प्रकाशक चौखम्मा संस्कृत भवन वाराणसी |
9. डॉ०एस० एस० माथुर (2015) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार अग्रवाल पब्लिकेशन|
10. डॉ० सरयू प्रसाद चौबे (2010) आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद|
11. डॉ० जगमोहन सिंह राजपूत (2015) शिक्षाः मानवीय संवेदनाएँ एवं सरोकार किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली
12. डॉ० श्रीमती जी. पी. शैरी स्वास्थ्य शिक्षा ISBN 81-7457-063-2 विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा|
13. अग्रवाल, जे.सी. (2019). शिक्षा पर दार्शनिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण. दिल्ली: शिप्रा पब्लिकेशन.|
14. भट्टाचार्य, डी. (2023)। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: शक्तियाँ और चुनौतियाँ।
15. एस.के. रमाकांत मोहालिक द्वारा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में शिक्षा का रूपांतरण (पृष्ठ 26-35)। दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।